भूमिका

आधुनिक हिंदी साहित्य का आरंभ गद्य विधाओं के विकास के साथ होता है। हिंदी गद्य विधाओं में 'कहानी' सबसे सशक्त और लोकप्रिय विधा के रूप विकसित हुई है। हिंदी कहानी की विकास यात्रा 1900 ई. के आस-पास आरंभ होती है किंतु वास्तविक पहचान प्रेमचन्द के (हिंदी कहानी क्षेत्र में) आगमन से होती है इसलिए प्रेमचन्द युगप्रवर्तक कहानीकार माने जाते हैं। प्रेमचन्द के समकालीन रचनाकारों में सुदर्शन का अपना विशिष्ट स्थान है।

सुदर्शन ने अन्य गद्य विधाओं जैसे- नाटक, उपन्यास आदि को भी अपनी लेखनी से समृद्ध किया लेकिन उनकी सबसे सशक्त लेखनी का प्रमाण उनकी कहानियाँ हैं। सुदर्शन की कहानियों में तत्कालीन समय की बहुत सारी समस्याओं का चित्रण किया गया है। उनमें कुछ समस्याएं वर्तमान काल में आकर और प्रासंगिक हो उठी हैं। आधुनिकता की अंधी दौड़ में मनुष्य मशीनों के साथ काम करते-करते खुद भी मशीन होता जा रहा है उसकी संवेदनाएं, भावनाएं क्षीण होती जा रही हैं जिसके कारण नैतिकता, ईमानदारी, आदर्शवादिता, व्यक्तित्व आदि का भी क्षरण होता जा रहा है। ऐसे समय में सुदर्शन की कहानियों में चित्रित नैतिकता, ईमानदारी, हृदयपरिवर्तन, आदर्शवादिता आदि तत्व मनुष्य में संवेदना और भावनाओं का निर्माण कर सक्ते हैं। इसी दृष्टि को केंद्र में रखते हुए मैंने सुदर्शन की कहानियों पर अध्ययन करना उचित समझा। यद्यपि इस क्षेत्र में आलोचनात्मक सामग्री का अभाव था और मुझे मूल कहानी संग्रह भी बड़ी कठिनाई से प्राप्त हुए फिर भी मेरा उत्साह कम नहीं हुआ। मेरे अध्ययन का विषय 'सुदर्शन की कहानियों में सामाजिक-जीवन' है जिसके लिए मैंने कुछ चयनित कहानियों को केंद्र में रखा है जैसे- 'पाप के पथ पर', 'कायापलट', 'अंधकार', 'कलयुग नहीं करयुग है यह', 'मनुष्य की कसौटी', 'संन्यासी', 'लोकाचार', 'परिवर्तन' आदि जिनमें सामाजिक जीवन को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने का प्रयास किया गया है।

मैंने शोध कार्य को चार अध्यायों में विभाजित किया है। पहला अध्याय 'हिंदी कहानी की पृष्ठभूमि' है इस अध्याय में मैंने संक्षिप्त रूप में हिंदी का उद्भव और विकास पर प्रकाश डाला है। दूसरे अध्याय का शीर्षक है 'युगीन संदर्भ: सुदर्शन की कहानियाँ' इस अध्याय में सुदर्शन के समय की परिस्थितियों का विवेचन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ में करने का प्रयास किया है। तीसरे अध्याय का शीर्षक 'सुदर्शन की कहानियों में सामाजिक-जीवन' है। सामाजिक-जीवन में सुदर्शन ने पारिवारिक जीवन, स्त्री–पुरुष संबंध आदि के साथसाथ जाति-व्यवस्था पर भी लेखनी चलाई है। इन सब का विश्लेषण किया गया है।

चौथे अध्याय में सुदर्शन की 'कहानी-कला' का मूल्यांकन करने के लिए इसका शीर्षक 'सुदर्शन की कहानियों का शिल्प-विधान' रखा गया है जिसके तहत इनकी कहानियों की भाषा, शैली पर बात की गई है।

इन अध्यायों के क्रमवार लेखन के बाद उपसंहार दिया गया है। इसमें शोध विषय की संक्षिप्त व्याख्या एवं संपूर्ण अध्ययन के फलस्वरूप उपलब्ध निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है। इस लघु-शोध कार्य को संपन्न करने में जिन विद्वानों तथा मनीषियों का सहयोग मिला उनका आभार व्यक्त किए बिना यह शोध अधूरा होगा। सर्वप्रथम मैं विभाग के अध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह का आभारी हूँ जिन्होंने इस विषय पर मुझे कार्य करने की अनुमति प्रदान की।

मैं आभारी हूँ अपने शोध निर्देशक डॉ. बीर पाल सिंह यादव का जिन्होंने मुझे न सिर्फ शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया बल्कि मुझे स्वतंत्र रूप से कार्य करने का अवसर प्रदान किया। साहित्य विभाग के सभी गुरुजनों के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मेरे इस लघु-शोध कार्य में सहयोग प्रदान किया।

मैं अपने मित्र मार्गदर्शक सुनील कुमार माण्डीवाल, लक्ष्मी, भारती और शहजाद का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ जो जीवन के हर पायदान पर मेरे सहयोगी रहे। साथ ही उन सभी मित्रों के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने कदम-कदम पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता की।

असीम प्यार और अमूल्य आशीर्वाद की इच्छा के साथ मैं अपनी माता श्रीमती तारावती, पिता श्री मथुरा प्रसाद को अपना प्रणाम निवेदित करना चाहता हूँ, जिन्होंने इस संघर्षपूर्ण जीवन में भी मुझे विद्या का संस्कार देते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

मैं उन सभी विद्वानों के प्रति तथा राहुल सांकृत्यायन पुस्तकालय का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिनकी पुस्तकों से मैं लाभान्वित हुआ। किसी भी कार्य को करने में त्रुटियों का होना स्वाभाविक है और उन्हीं त्रुटियों से सीखने का प्रयास करते हुए कार्य को आगे बढ़ाया जाता है। इसी प्रयास के साथ मैं इस कार्य में हुई त्रुटियों के लिए क्षमा मांगते हुए एक बार पुन: सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रकाश

उपसंहार

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य की शुरुआत गद्य विधा से होती है क्योंकि पद्य की भाषा और उसका स्वरूप उस समय की बदलती चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान कर पाने में अक्षम साबित हो रही थी। कहानी भी आधुनिक साहित्य की एक सशक्त विधा बनकर उभरी जिसमें जीवन के विविध आयामों का उद्घाटन किया गया।

सुदर्शन 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक समय के एक सशक्त कहानीकार हैं। उन्होंने अपनी लेखनी से कहानियों को एक नया आयाम दिया है। उनकी कहानियाँ नैतिकता के मूल्यों के साथ-साथ सामाजिक विडंबनाओं को भी अपने अंदर समाहित करने की क्षमता रखती हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में सामाजिक पहलुओं के साथ धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक पहलू पर भी विचार किया है। उनके साहित्य में युग चेतना की झलक मिलती है।

अंग्रेजों के प्रभाववश तत्कालीन समय यद्यपि प्रौद्योगिकी और विज्ञान के विकास की शुरुआत का था पर भारतीय समाज में प्रचलित अंधविश्वास, रूढ़ियाँ, धार्मिक मान्यताएं पहले की तरह ही जड़ जमाए हुए थीं। इसमें पर्दा-प्रथा, बाल-विधवा समस्या, पुत्री पैदा करने पर प्रताड़ना आदि प्रमुख थे। सुदर्शन ने इन सभी समस्याओं पर भी अपनी लेखनी चलाई है। सुदर्शन क्योंकि आदर्शवादी कहानीकार थे इसलिए उन्होंने कहानियों के अंत में समस्याओं का हल भी दिखाने का प्रयास किया है। इन भारतीय परंपराओं और रूढ़ियों के साथ-साथ जातिगत भेदभाव, किसानों की तत्कालीन समस्याओं पर भी लेखनी चलाई है।

स्त्रियों के वैवाहिक संदर्भ में प्रचलित निरर्थक रूढ़ियों पर भी सुदर्शन ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रहार किया है। उदाहरण स्वरूप 'कलयुग नहीं करयुग है यह' कहानी में उन्होंने एक ऐसी पढ़ी-लिखी लड़की का चित्रण किया है, जो एक अत्याधुनिक लड़के से शादी करने से इसलिए इंकार कर देती है क्योंकि वह स्त्रियों की कदर करना नहीं जानता। उस समय के संदर्भ में किसी लड़की के लिए यह निर्णय एक क्रांतिकारी कदम था। इससे सुदर्शन की प्रगतिशीलता का परिचय मिलता है।

धार्मिक स्थिति को उन्होंने अपनी 'दो-डॉक्टर' कहानी में प्रस्तुत किया है। इस कहानी में सुदर्शन हिंदू या मुस्लिम धर्म की बात नहीं करते बल्कि वे सेवा-धर्म को सबसे

बड़ा धर्म स्वीकार करते हैं। जिस समय 'हिंदू, मुस्लिम भाई-भाई' की बातें मात्र किताबी होकर रह गईं थीं और समाज में धर्म तथा जातिगत विद्वेष अपने उत्कर्ष पर था उस समय सुदर्शन की कहानियाँ नैतिक मूल्यों के साथ-साथ धर्म, जाति का आदर्श स्वरूप प्रकट करती दिखाई देती हैं।

अपनी कहानियों में सुदर्शन ने पूँजीवादी संस्कृति पर भी करारा प्रहार किया है। उनकी कहानी 'चैन नगर के चार बेकार' में इस पूँजीवादी-अर्थव्यवस्था को किसी भी देश के लिए एक अभिशाप माना है। यह व्यवस्था किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति, धर्म और जीवन-शैली को प्रभावित करती है और आधुनिकता की मुहर लगा उसे जड़ से नष्ट करने का प्रयास करती है। पूँजीवादी व्यवस्था का जो चित्र सुदर्शन ने कहानी के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया है, वह हमारे समाज में आज स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसलिए उनकी कहानियाँ आज भी प्रासंगिक हैं।

सुदर्शन ने अपनी कहानियों में संयुक्त परिवारों के खोखलेपन और उसमें पैदा होने वाली दरारों को दिखाया है और मध्यवर्गीय परिवार में नवधनाढ्य व्यक्ति द्वारा अपने से अधिक धनी व्यक्ति की नकल करने के परिणामों को दर्शाया है।

उनकी कहानियाँ राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से भी जुड़ती हैं। यह समय अंग्रेजों की गुलामी का था और उस समय भारतीय नेताओं और क्रांतिकारियों द्वारा देश को अंग्रेजों से आजाद कराने की मुहिम चलाई जा रही थी। जलियाँवाला बाग हत्याकांड में अंग्रेजों द्वारा निर्दोष भारतीयों पर बर्बरतापूर्वक चलाई गईं गोलियाँ उनकी दमनकारी प्रवृत्ति को दर्शा रहीं थीं। इसी तरह से अंग्रेज भारतवासियों पर जुल्म करते आ रहे थे। इसके विरोध में भारतीय नेताओं और युवकों द्वारा कई आंदोलन चलाए गए जैसे- सत्याग्रह, स्वदेशी, स्वराज, आंदोलन। सुदर्शन की कहानियों पर इस राजनीतिक उथल-पुथल का भी पर्याप्त प्रभाव दिखाई देता है। उनकी कहानियों में इन आंदोलनों की अनुगूँज सुनाई देती है।

सुदर्शन हृदयपरिवर्तन में भी विश्वास रखते हैं। इससे उनके ऊपर गाँधी का प्रभाव माना जा सकता है। धर्म तथा जाति से ऊपर उठकर उन्होंने समाज को मानवता की कसौटी पर कसने का प्रयास किया है।

इस तरह हम देखते हैं कि सुदर्शन की कहानियों में तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक स्थितियों का चित्रण किया गया है। उनकी कहानियों में यह चित्रण उस समय की मांग थी। इस चित्रण में भाषा का सरल और सहज रूप प्रस्तुत किया गया है। इनके यहाँ शैली का स्वरूप प्राय: वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक है।

सुदर्शन ने अपनी कहानियों में व्यक्ति और समाज को विविध संदर्भों में चित्रित करके एक विशिष्ट जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया। यह जीवन-दर्शन निश्चय ही क्रांतिकारी है। जहाँ सांस्कृतिक निष्ठा का प्रश्न है, वहाँ सुदर्शन ने उस निष्ठा के पुनर्स्थापन के लिए शक्तिशाली कदम उठाया लेकिन अतीत के प्रति उनके हृदय में अंधमोह कभी नहीं रहा। जहाँ अंधपरंपराओं को विनष्ट करने के प्रसंग हैं, वहाँ सुदर्शन ने अपनी रचनाओं में क्रांतिकारी चिनगारियाँ उत्पन्न करके पाठकों के हृदय को भी इस दिशा में प्रेरणा प्रदान की।